P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-II * Issue-X*June-2015

पर्यावरण बोधः महाकवि बाण के हर्षचरित

पुष्पा शर्मा
व्याख्याता,
संस्कृत विभाग,
गुरू नानक कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उदयपुर

सारांश

महाकवि बाणभट्ट संस्कृत गद्य साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। महाकवि बाणभट्ट का गद्य साहित्य पर इतना प्रभाव है कि कोई भी संस्कृत साहित्य का सहृदय पाठक इनके ग्रन्थों की उपेक्षा नहीं कर सकता, अतः ''बोणाच्छिष्टंजगत्सर्वम्'' रूप में आपकी ख्याति है। महाकवि बाणभट्ट प्रकृति के चितरे कवि हैं। बाणभट्ट ने 'हर्षचरित' नामक अख्यायिका में ''प्रकृति – चित्रण'' को सूक्ष्म रूप से प्रस्तुत किया है। बाणभट्ट का जीवन प्रकृति के सुरम्य वातावरण में व्यतीत हुआ। बाणभट्ट ने ''हर्षचरितम्'' नामक आख्यायिका द्वारा पर्यावरण के प्रति मानव के कर्तव्यों, पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम के उपाय, कर्तव्यपालन के लिये प्रेरणा देना, पर्यावरण संरक्षण के व्यावहारिक उपायों का अन्वेषण, वातावरण (पर्यावरण) के प्रति मानव में संचेतना की भावना जाग्रत करना तथा पर्यावरणीय कारकों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, वनस्पति, पर्वत, आश्रम, पशु–पक्षी यज्ञ) का वर्णन करते हुए तत्कालीन समाज में प्रचलित वातावरण शुद्धि के उपायों पर प्रकाश डाला है, जो वर्तमान में मानव को प्राकृतिक तत्वों में सन्तुलन स्थापित करने की प्रेरणा प्रदान करेगा।

मुख्य शब्द : पर्यावरण बोध, महाकवि बाण।

परिचय

आज इक्कीसवीं शताब्दी में प्रवेश कर रहे विश्व में नित नये आविष्कार हो रहे हैं। विकास की इस अंधी दौड़ में मानव प्रकृति का अत्यधिक दोहन कर रहा है, जिससे जीवनोपयोगी प्राकृतिक संपदा धीरे–धीरे न्यून होती जा रही है। प्राकृतिक उपादानों में असंतुलन हो रहा है। वर्षा, गर्मी, सर्दी अनिश्चित रूप ले रहे हैं। पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ने से वायुमण्डल में विद्यमान ओजोन परत में छद हो गये हैं, परिणामस्वरूप पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है। धव प्रदेशों की बर्फ पिघल रही है, समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है, जिससे विभिन्न क्षेत्रों के डूबने का खतरा उत्पन्न हो गया है। वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से ऋतुचक्र परिवर्तित हो रहा है। जिसका परिणाम कभी अनावृष्टि तो कभी अतिवृष्टि। इन समस्याओं ने वैज्ञानिकों, राजनेताओं तथा बुद्धिजीवियों को इनका समाधान ढूंढ़ने के लिये बाध्य किया है। वर्तमान की समस्याओं के समाधान के लिऐ हमारी दृष्टि प्राचीन साहित्य की ओर जाती है क्योंकि वर्तमान की जड़ अतीत में रहती है और फल भविष्य में है। संस्कृत साहित्य का प्रकृति–चित्रण ही वस्तुतः पर्यावरण चेतना है। पर्यावरण शब्द आज के संदर्भ में नया है, लेकिन प्राचीन काल में इसका प्रचलन हमें **''प्रकृति–चित्रण''** के रूप में मिलता है। संस्कृत साहित्य का प्रकृति प्रेम, प्रकृति का महत्व तथा संरक्षण की चेतना हमें वैदिक साहित्य, पुराण, साहित्य ग्रन्थ तथा लौकिक संस्कृत साहित्य में प्राप्त होती है। अतः संस्कृत साहित्य में प्रकृति–चित्रण के माध्यम से पर्यावरण चेतना के जितने मार्ग दिखलाए गये हैं, उतने अन्य किसी भाषा व साहित्य में विद्यमान नहीं है।

संस्कृत गद्य साहित्य में पकृति–चित्रण का मनोहारी वर्णन मिलता है। अतः वर्तमान में पर्यावरण चेतना की महत्ती आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए ''वर्तमान में पर्यावरण बोधः हर्षचरित'' के अन्तर्गत पर्यावरण के घटक तत्वों, सरस्वती द्वार शिव की अष्टमूर्तियों की आराधना करने, विन्ध्याटवी, ग्राम वनस्पति, पशु–पक्षियों का वर्णन करते हुए महाकवि बाणभट्ट ने पर्यावरण सम्बन्धी सजीव चित्र प्रस्तुत किया है, जो पर्यावरण की महत्ता तथा पर्यावरण संरक्षण में बाणभट्ट के योगदान पर प्रकाश डालता है। यथाः–

1. प्राकृतिक तत्वों के प्रति दिव्य भावना।
2. पंचतत्वों में संतुलन की प्रेरणा देना।
3. अपशिष्टों के न्यूनीकरण पर बल देना।
4. वनस्पति संरक्षण
5. वन्यजीवन संरक्षण
6. यज्ञ द्वारा पर्यावरण

बाणभट्ट ने 'हर्षचरित' में सर्वप्रथम पर्यावरण के कारक तत्वों का संकेत करते हुए ''सरस्वती द्वारा शोण नदी के तट पर शिव की अष्टमूर्तियों का ध्यान करने का उल्लेख किया है।

ध्रुवागीतिगर्भामवनिपवनवनगहन
दहनतपन तुहिन किरण।
यजामानमयी मूर्तिरष्टावपि ध्यायन्ती
सुचिरमष्टपुष्पिकामदात्।''

अर्थात् अवनि (पृथ्वी), पवन, वन (जल), गगन, दहन (अग्नि), तपन (सूर्य), तुहिन किरण (चन्द्र) और यज्ञमान (मानव) आदि का ध्यान करते हुए वाग्दवी सरस्वती 8 शिवलिंग ध्रुवागान के साथ उनकी ''अष्टपुष्पिका अर्चना'' किया करती थी।[1] ये क्रमशः पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मानव, सूर्य और चन्द्रमा पर्यावरण घटकों के वाचक है। स्वयं सरस्वती के हाथों से भूलोक में इन लिंगरूपों की पूजा का बाणभट्ट ने संकेत दिया। ये सभी पर्यावरण के कारक है और एक दूसरे पर आश्रित हैं। प्रकृति के साथ इन कारकों का अन्योन्याश्रित और अगागिभाव सम्बन्ध मानने सृष्टि चक्र में ऋतु की प्रतिष्ठा बनी है।

पृथ्वी

पृथ्वी पर्यावरण का प्रमुख घटक तत्व है। सर्वप्रथम पृथ्वी तत्व का उल्लेख शिवलिंग की अष्टमूर्तियों की आराधना करवाने के माध्यम से 'अवनि' शब्द द्वारा किया है।[2] जिसकी आराधना की जाती है, उसको हानि पहुँचाने का भाव मानव मान में आ ही नहीं सकता है। पर्यावरण चेतना हर्ष की राजधानी श्रीकंठ– जनपद, प्रीतिकूट गाँव की भूमि उसकी उर्वरा शक्ति[3], उर्वरा शक्ति का बढ़ाने के उपाय [4], भूमि के शुद्धिकरण[5] तथा मिट्टी की उपयोगिता में दिखाई देती है।

इस प्रकार हर्षचरित में प्रीतिकूट की उपजाऊ भूमि, उर्वरा–शक्ति, उर्वरता को बढ़ाने के उपाय, मिट्टी से वस्तुओं की शुद्धता तथा आध्यात्मिक उपयोग आदि के रूप में वर्णन हुआ है।

जल

बाणभट्ट ने शिव की अष्टमूर्ति में तृतीय मूर्ति ''वन'' (जल) तत्त्व का संकेत दिया है। जल को पुष्प अर्पित करना उसके संरक्षण का प्रतीक है। बाणभट्ट ने स्वच्छ जल, जल की महत्ता (सन्ध्यावन्दन द्वारा), जल–प्रबन्ध जलीय जीव का वर्णन करते हुए सरस्वती द्वारा स्वच्छ जल का वर्णन किया है।

''चक्रे पुण्यं सरस्वत्या यो वर्षमिव भारतम्।[7]

अर्थात् सरस्वती नदी ने सम्पूर्ण मानवजाति को पवित्र किया है। अन्यत्र सन्ध्यावन्दन के लिये बैठे हुए मुनियों द्वारा 'मन्दाकिनी नदी' की स्वच्छता[8] को पर्यावरण शुद्धि द्वारा अभिव्यक्त किया है। हर्ष के राज्यकाल में जल–प्रबन्ध की उचित व्यवस्था थी। विन्ध्याटवी में प्याऊओं, जल को शीतल रखने के उपाय मिलता हैं[9] जो तत्कालीन समाज की जल संरक्षण, जल शुद्धीकरण का बोध करवाता है।

सूर्य / अग्नि

पर्यावरण के पंच प्राकृतिक तत्वों में सूर्य (तेज) प्रमुख घटक तत्त्व है। सूर्य के उदित होते ही संसार की समस्त गतिविधियाँ संचालित हो उठती है। सूर्य नवग्रहों में श्रेष्ठ है, जिसकी उपासना से मनोकामनाओं की पूर्ति तथा रोगों का नाश होता है। राजा प्रभाकरवर्धन द्वारा पुत्र की अभिलाषा हेतु 'सूर्योपासना' तथा 'आदित्यहृदय मंत्र''[10] जपने का वर्णन है। सरस्वती दुर्वासा ऋषि के शाप से दुःखी होकर मृत्युलोक में उतरती है, उस समय सूर्योदय तथा मध्यान्ह की उष्णता[11] का संकेत है। इस प्रकार का वर्णन पर्यावरण चेतना को बताता है, क्योंकि दिन में सूर्य की उष्णता से जल वाष्पीकरण होता है, जिसके परिणामस्वरूप वर्षा होती है।

अग्नि

अग्नि के तीन प्रकार– भौमवह्नि, दावाग्नि तथा वाड्वाग्नि है। अग्नि मानव के लिये आवश्यक है। बाणभट्ट ने विभिन्न उपमाओं द्वारा हर्ष के प्रताप एवं यज्ञ का उल्लेख किया है। वह पाक क्रिया में सहायक है। यदि अग्नि भीषण हो जाय तो सब कुछ विनिष्ट हो जाता है। अग्नि की भीषणता से संसार की रक्षा की प्रार्थना की गयी है, यथाः–

''जयति ज्वलत्प्रतापज्वलनप्राकार – कृतजगद्रक्षः।
सकलप्रणयिमनोरवा– सिद्धि श्री पार्वतोहर्ष।।[12]

अन्यत्र भैरवाचार्य द्वारा अग्निहोत्र से निवृत होकर भस्म की लकीर के घेरे में बैठने का वर्णन है।[13] अग्नि जहाँ प्रज्वलित होती है वह स्थान कीटाणुओं से रहित एवं शुद्ध होता है। बाणभट्ट अग्निहोत्र की राख की महत्ता से परिचित थे। इसी कारण उन्होनें भैरवाचार्य के भस्म की लकीर में बैठने का वर्णन किया है।

इस प्रकार बाणभट्ट ने हर्षचरित नामक आख्यायिका में प्रभाकरवर्धन द्वारा सूर्य की उपासना करने, आदित्य हृदयमत्र के जपने, त्रिकालिकसन्ध्या, यज्ञकी भस्म की उपयोगिता आदि का वर्णन किया है।

वायु

वायु पर्यावरण का प्रमुख घटक तत्व है। कवि ने वायु को श्वसन–क्रिया के लिये आवश्यक बताते हुए शीतल, मन्द, सुगन्धित, तीव्र तथा उष्ण वात का पर्यावरण दृष्टि से वर्णन किया है। शीतल प्रदूषण रहित वायु प्राणियों के लिये आवश्यक है, क्योंकि यह स्वास्थ्यवर्द्धक होती है– ''मलयमरूदुच्छवासहेतु'' अर्थात् मलयपर्वत से आने वाली शीतल वायु उच्छ्वास का कारण है। अन्यत्र देवों की स्तुति के माध्यम से गुग्गुल तथा बेल के पत्तों की माला से हवा में पुष्प की सुगन्ध[14] व्याप्त होने का संकेत है। अतः प्राणवायु के आधारभूत तीनों गुण शीतल, मन्द तथा सुगन्ध तत्कालीन वात संचेतना को बताता है।

आकाश

पर्यावरण के पंच प्राकतिक तत्वों में एक तत्त्व आकाश (Space) है। बाणभट्ट ने हर्षचरित में शिव की अष्टमूर्ति में ''गगन'' तत्व आकाश[15] का बोध करवाया है। प्रकाश एवं अन्धकार दोनों का अस्तितव आकाश में है। पक्षी वर्ग के जीवन सुरक्षा एवं संचरण में आकाश की प्रमुख भूमिका है। मधुर शब्द से आकाश की अनुकूलता तथा कर्णककर्श शब्द से ध्वनि प्रदूषण को अभिव्यक्त किया है। हर्ष के जन्मोत्सव पर बजाये जाने वाले वाद्ययंत्रों की ध्वनि सुनकर घोड़े प्रसन्न होकर हिनहिनाने लगे। यहाँ वाद्ययंत्रों की मधुर ध्वनि से जीवों के प्रसन्न होने का वर्णन

है। बाणभट्ट ने कर्णकर्कश ध्वनि, युद्धों में प्रयुक्त वाद्यों के द्वारा होने वाली तीव्र ध्वनि का वर्णन किया है, जिसे हम 'ध्वनिप्रदूषण' की श्रेणी मे रख सकते हैं। यथाः–

''निर्दयप्रहतलम्बापटहशतपटुरवबधिरीकृत श्रवणविवरैः।''[16]

यहाँ कवि ने तीखी आवाज से कर्णेन्द्रिय पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव का वर्णन किया है जो शारिरिक एवं मानसिक प्रदूषण का कारण है।

वनस्पति

वनस्पति (वृक्ष) मानव जीवन के लिये आवश्यक है। पेड पौधे मानव द्वारा विसर्जित कार्बनडाऑक्साईड को ग्रहण कर प्राणवायु (ऑक्सीजन) छोड़ते हैं, जो मानव की श्वसन क्रिया में आवश्यक है। तत्कालीन समाज में वनस्पति संरक्षण के प्रति जागरूकता पायी जाती थी। बाणभट्ट ने प्रभाकरवर्धन की बीमारी से आहत यशोमती के माध्यम से वृक्षों के प्रति अपने दायित्व ओर संचेतना की अभिव्यक्ति करवायी है। यशोमती अग्नि में प्रवेश करने से पर्व वृक्षों से क्षमा मांगती हुई कहती है–

''तातचूत! चिन्तयात्मानं प्रवसति तेजननी। वत्स जातीगुच्छ! गच्छाम्यापृच्छस्व माम्! मया विनाद्यानाथा भवसि भगिनि भवनदाडिमलते! रक्ताशोक! मर्षणीयाः पादप्रहाराः कर्णपूरवल्लवभंगापराघश्च! पुत्रक! अन्तःपुरबालबकुलक वारूणीगठड्षग्रहणदुर्ललित! दष्टोऽसि। वत्से! प्रियड़– गुलतिके! गाढ़मालिंग मां दुर्लभा भवामि ते। भद्र भवनद्वारसहकारक! दातत्यो निवापतोयांजलिरपत्यमसि।''

अर्थात् वत्स जातीगुच्छ! जाती हूँ, विदा दो। बहन दाड़िमलता मेरे बिना तू आज अनाथ हो रही है। रक्ताशोक, जो मेरे चरण प्रहार है और कर्णपूर बनाने के लिए तुम्हारे पल्लव तोड़े हैं, उन अपराधों को क्षमा करना। हे प्रियपुत्र! अन्तःपुर के छोटे बकुल, मदिरा के गण्डूष लेने में दुर्ललित, अब तेरा अन्तिम दर्शन है। वत्सा प्रियड़ गुलतिका! मुझे कसकर अँकवार ले, दुर्लभ हो रही हूँ। हे भद्र! भवनद्वार के सहकार, तुझे मैंने अपत्य समझा है, जलाजंलि देना।[17]

इस प्रकार वृक्षों के साथ मानव के आत्मीय सम्बन्ध की जैसी अभिव्यक्ति यहाँ दिखलाई देती है, वैसी अन्यत्र दिखलाई नहीं देती है। यशोमती आम को पुत्र, दाड़िमलता को बहन, जातीगुच्छ को वत्स कहकर सम्बोधित करती है। यशोमती वार्तालाप से विदित होता है कि वह कर्तव्यपालन को अधूरा छोड़कर जा रही थी। वह (चूत, दाड़िमलता, जातीगुच्छ, रक्ताशोक) क्षमता माँगती है। भवनद्वार के सहकार को अपत्य समझकर लजांजलि देने को कहती है। इससे बढ़कर वनस्पति संरक्षण की भावना और कहाँ प्राप्त हो सकती है? वन संरक्षण के लिए वनवालों की नियुक्ति की जाती थी, जो गाँवों से आकर लकड़ी काटकर ले जाने वाले लकड़हारों के कुठार छीन लेते थे।[18] जो इस बात को इंगित करता है कि हरे वृक्षों को काटने पर प्रतिबन्ध था। तत्कालीन समाज में वन की सुरक्षा की भावना पायी जाती थी। अतः स्पष्ट है कि बाणभट्ट वनस्पति संरक्षण के प्रति जागरूक थे।

पशु–पक्षी

पशु–पक्षी पर्यावरण के महत्वपूर्ण अंग है। पशुओं का पर्यावरण से निकट सम्बन्ध है, क्योंकि वातावरण पर पशु–पक्षी भी अपना प्रभाव डालता है। पशु–पक्षी अनुकूल वातावरण में जीवित रहते हैं तथा प्रतिकूलता में विनाश को प्राप्त होते हैं। बाणभट्ट ने हर्षचरित में महारानी यशोमती का पशु–पक्षियों से आत्मीय सम्बन्ध का वर्णन किया है।महाराज प्रभाकरवर्धन की बोमारी से दुःखी यशोमती सती होना चाहती है तो पशु–पक्षी उसके पीछे चलने लगते हैं तो उनको पुनः लौटाने को कहते हुए अपने कर्त्तव्य को पूर्ण न कर पाने पर देवी (अम्बा) से उसकी रक्षा की प्रार्थना करती है–

''भ्रातःपंचरशुक! यथा न विस्मरसि माम्, किं व्याह–रसिदूरीभूतास्मि ते? शारिके! स्वप्ने नः संमागमः पुनभूर्यात्! मातः। मार्गलम्नं कस्यसमर्ययामि गृहमयूरकम्? अम्बे! सुतवल्लालनीयमिदं हंसमिथुनम्, मन्दपुण्यया मया न संभावितोऽस्य चक्रवाकयुगलस्य विवाहोत्सवः मातृवत्सले! निवर्त–स्वगृहहरिणिके।''

अर्थात् भाई पंचरशुक! मुझे भूलना मत, क्या कर रहे हो? मैं जा रही हूँ। शारिके! स्वप्न में तुम्हारा मिल फिर हो। हाय माँ (अम्बा) रास्ता राके हुए गृहमयूर को किसे समर्पित कर जाँउ? अम्बे! पुत्र के समान हस के इस जोड़े को पालना। मन्दपुण्यशाली मैं चक्रवाक के जोड़े का विवाहोत्सव न रख सकी। मातृवत्सले अरीगृहहरिणिके, लौट जा।[19]

यहाँ यशोमती का मृत्यु के अन्तिम समय में स्वयं के पुत्रों (राज्यवर्धन व हर्षवर्धन) व पुत्री (राजयश्री) की चिन्ता न कर भवन में पालित पशु–पक्षियों की सुरक्षा को लेकर व्याकुल एवं चिन्तित थी। वह अन्तिम समय में अपने जीवन शक्ति के विद्यमान रहते हुए उनकी सुरक्षा का उत्तरायित्व सौंपना चाहती थी। अतः देवी (अम्बा) से प्रार्थना करती है कि पशु–पक्षियों को तुम पालना तथा ध्यान रखना। कवि ने यशोमती के माध्यम से पशु–पक्षियों के संरक्षण की भावना मानव मन में उत्पन्न की है, जो वन्यजीवन संरक्षण अर्थात् आधुनिक अभ्यारण्यों का अतिप्राचीन एवं आदर्श रूप प्रतीत होता है।

निष्कष

महाकवि बाणभट्ट ने हर्षचरित में पर्यावरण कारकोंका वर्णन करते हुए तत्कालीन समाज में प्रचलित वातावरण शुद्धि के उपायों पर प्रकाश डाला है जो वर्तमान में मानवमन में पर्यावरण संचेतना की भावना को उत्पन्न करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हर्षचरितम्, प्रथम उच्छ्वास, पण्डित जगन्नाथ, पाठक, पृ. 35
2. हर्षचरितम्, प्रथम उच्छ्वास, पण्डित जगन्नाथ, पाठक, पृ. 36
3. हर्षचरितम्, प्रथम उच्छ्वास, पण्डित जगन्नाथ, पाठक, पृ. 159, 160
4. पुराणपासूत्किरकरीषकूअवाहिनीनां धूर्तगतघुलिसरसैरिभसरोषस्व– रसायमाणानां सक्रीड..... .....तुंगशुगैः।''हर्षचरितम्सत्पमउच्छवास पृ. 409, 410
5. हर्षचरितम्, प्रथम उच्छ्वास, पृ. 97

6. हर्षचरितम्, प्रथम उच्छ्वास, पृ. 35
7. हर्षचरितम्, प्रथम उच्छ्वास, पृ. 3
8. हर्षचरितम्, प्रथम उच्छ्वास, प्रो. चु. शुक्ल, पृ. 49
9. हर्षचरितम्, प्रथम उच्छ्वास, पृ. 407, 408
10. हर्षचरितम्, चतुर्थ उच्छ्वास, पण्डित श्री जगन्नाथ पाठक, पृ. 208
11. हर्षचरितम्, द्वितीय उच्छ्वास, पण्डित श्री जगन्नाथ पाठक, पृ. 80, 81
12. हर्षचरितम्, प्रथम उच्छ्वास, पण्डित श्री जगन्नाथ पाठक, पृ. 80
13. हर्षचरित एक सांस्कृतिक अध्ययन – वासुदेवशरण अग्रवाल, पृ. 57
14. हर्षचरितम्, तृतीय उच्छ्वास, वासुदेवशरण अग्रवाल पृ. 170, 170
15. हर्षचरितम्, प्रथम उच्छ्वास, वासुदेवशरण अग्रवाल पृ. 35
16. हर्षचरितम्, चतुर्थ उच्छ्वास– वासुदेवशरण अग्रवाल पृ. 356, 357
17. वही, प्रथम उच्छवास, पृ. 284
18. वही, प्रथम उच्छवास, व्याघ्रमन्त्रैः अयन्त्रितवनपालहठद्वियमाणपर– ग्रामीणकाष्ठिककुठारैः। वही, सप्तम् उच्छवास, पृ. 406
19. वही, प्रथम उच्छवास, पृ. 284